Toppersnotes®
Unleash the topper in you

C–TET

Central Teacher Eligibility Test

Central Board of Secondary Education (CBSE)

Volume - 2 (A)

Hindi

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्णमाला	1
2	तत्सम व तद्भव शब्द	5
3	देशज एवं विदेशज शब्द	10
4	उपसर्ग	14
5	प्रत्यय	18
6	संधि	23
7	समास	35
8	संज्ञा	45
9	सर्वनाम	47
10	विशेषण	49
11	क्रिया	52
12	अव्यय एवं अविकारी शब्द	55
13	पर्यायवाची शब्द	59
14	विलोम शब्द	64
15	वाक्य के एक शब्द	70
16	शब्द युग्म	78
17	एकार्थी शब्द	86
18	वर्तनी शुद्धि	91
19	पद बंध	96
20	पद परिचय	98
21	वाक्य एवं वाक्य प्रकार	100
22	लिंग	105
23	वचन	110

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	काल	113
25	विराम चिन्ह	117
26	कारक	120
27	काव्य मे भाव, विचार, शिल्प, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	123
28	मुहावरे	125
29	लोकोक्तियाँ	133
30	अपठित गद्यांश	140
31	हिन्दी शिक्षण	145
32	हिन्दी शिक्षण विधि	148
33	भाषा–शिक्षण उपागम	156
34	भाषा दक्षता का विकास	158
35	भाषा कौशल	160
36	शिक्षण के अन्य कौशल	163
37	भाषा–शिक्षण में चुनौतियाँ	165
38	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	166
39	आंकलन	170
40	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	175
41	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	177

1 CHAPTER

वर्णमाला

- किसी भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसे छोटे भागों में और न तोड़ा जा सकता हों, ध्वनि कहलाती है, ध्वनि को वर्ण कहा जाता है। **वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला** कहा जाता है।
- हिंदी वर्णमाला में मूलत: कुल 44 वर्ण होते हैं जिन्हें 2 भागों में विभक्त गया है।

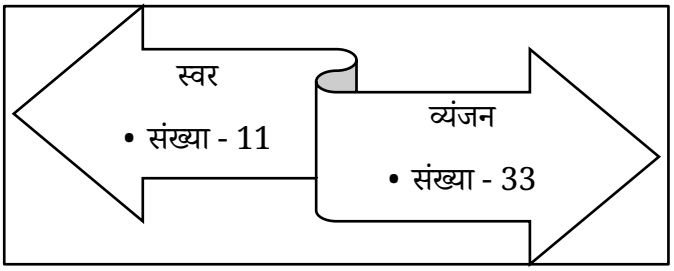

क्या आप जानते हैं?

वर्णों को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। वर्णों की संख्या कहीं 52 तो कहीं 44 मानी गयी है। सरकारी वर्णमाला में ड़, ढ़, श्र को स्थान नहीं दिया गया है, अत: वहाँ कुल वर्णों की संख्या 53-3 = 49 ही मानी गयी है।

सर्वमान्य मत - 44 वर्ण हैं। (11 स्वर तथा 33 व्यंजन)

वर्णों का वर्गीकरण

- **श्वास वायु के आधार पर**
  - **(i) अनुनासिक** – अनुनासिक वर्णों की ध्वनि में श्वास वायु मुख के साथ नाक से बाहर निकलती है। अनुनासिक वर्णों में चन्द्रबिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसे – अँ, इँ, प्रत्येक वर्ग का पाँचवां वर्ण।
  - **(ii) अल्प प्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय वायु का कम प्रवाह होता है, अल्प प्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का 1, 3 व 5 वाँ वर्ण।
  - **(iii) महाप्राण** – ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु का प्रवाह होता है, महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण।
- **स्वर तत्रों की स्थिति व कम्पन्न के आधार पर**
  - **(i) घोष/सघोष :-** घोष का शाब्दिक अर्थ है नाद या गूंज। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर तंत्र में कंपन (गूंज उत्पन्न होना) होता है, उन्हें घोष वर्ण कहते हैं।

    घोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के अन्तिम तीन वर्ण घोष वर्ण कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं। इनकी कुल संख्या तीस है।
  - **(ii) अघोष :-** जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु में कम्पन नहीं होता अतः कोई गूंज उत्पन्न नहीं होती वे वर्ण अघोष वर्ण कहलाते हैं।

    अघोष वर्णों की पहचान - सभी वर्गों के पहले और दूसरे वर्ण अघोष वर्ण होते हैं, इनकी संख्या तेरह है।

स्वर

- ऐसी ध्वनियाँ अथवा वर्ण जिनका उच्चारण करने में अन्य किसी ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें स्वर कहते हैं।
- स्वर स्वतंत्र एवं पूर्ण होते हैं। **स्वर 11 होते हैं** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

- **इन्हें मूलत: 3 भागों में बांटा जा सकता है।**
  - **(i) ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में अपेक्षाकृत कम समय लगे उन्हें ह्रस्व स्वर कहा जाता है। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। जैसे - अ, इ, उ।
  - **(ii) दीर्घ स्वर -** जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगे उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इन्हें मात्रा द्वारा भी दर्शाया जाता है। ये दो स्वरों को मिला कर बनते हैं अतः इन्हें संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। जैसे – आ, ई, ऊ।
  - **(iii) प्लुत स्वर** – जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ सवा से भी अधिक समय लगता है वे प्लुत स्वर कहलाते हैं।

- **जिह्वा के आधार पर स्वर**
  - **(i) अग्र स्वर** –स्वर जिसमे जीभ का अग्र भाग प्रयोग में आता हैं । - इ, ई, ए, ऐ
  - **(ii) मध्य स्वर** – जिसमे जीभ का मध्य भाग प्रयोग में आता हैं। - अ
  - **(iii) पश्चस्वर** – जिसमे जीभ का पश्च भाग प्रयोग में आता हैं । - आ, उ, ऊ, ओ, औ

वर्ण	उच्चारण स्थान
अ, आ	कंठ
इ, ई	तालु
ऋ	मूर्धा
उ, ऊ	ओष्ठ
ए, ऐ	कंठ + तालव्य
ओ, औ	कंठ + ओष्ठ

महत्वपूर्ण तथ्य –

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्ठाध्यायी रचना में मिलता है।
- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है

  समानाक्षर स्वर
  - ✓ आ – अ + अ
  - ✓ ई – इ + इ
  - ✓ ऊ – उ + उ

  संधि स्वर
  - ✓ ए – अ + इ
  - ✓ ऐ – अ + ए
  - ✓ औ – अ + ओ
- अंग्रेज़ी से गृहित स्वर – ऑ (डॉक्टर, कॉलेज)

व्यंजन

- स्वरों की सहायता से बोली जाने वाली ध्वनियों को ही व्यंजन कहा जाता है।
- जब हम क बोलते हैं तब उसमें क् + अ मिला होता है। इसी प्रकार प्रत्येक व्यंजन स्वर की सहायता से ही बोला जाता है।
- व्यंजन अस्वतंत्र एवं अपूर्ण होते हैं।
- व्यंजन को **मूलतः 3 भागों** में बांटा जा सकता है।

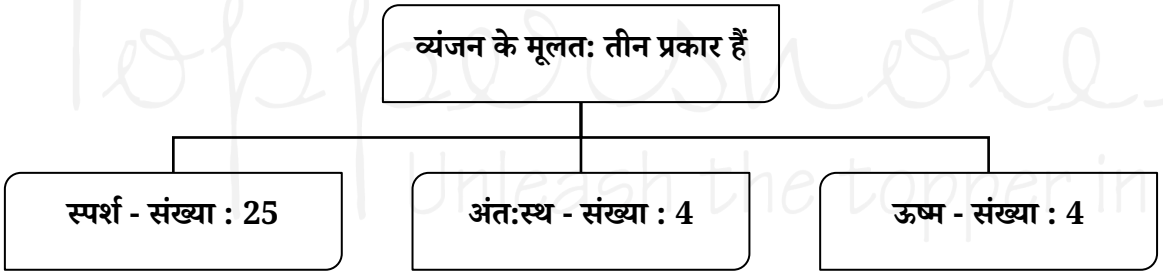

उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को आठ भागों में बांटा गया है है:

1. **स्पर्शी** : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में फेफड़ों सद्वारा छोड़ी गयी वाली हवा वाग्यंत्र के किसी अवयव का स्पर्श करके बाहर निकलती है, स्पर्शी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे – क् ख् ग् घ्, ट्, ठ ड ढ़, त्, थ् ध, प् फ् ब् भ्
2. **संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में दो उच्चारण अवयव इतनी निकटता पर आ जाते हैं कि बीच का मार्ग छोटा हो जाता है तब वायु उनसे घर्षण/संघर्ष करती हुई बाहर निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - श, ष्, स्, ह, ख्, ज, फ्
3. **स्पर्श संघर्षी :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में स्पर्श का समय अपेक्षाकृत अधिक होता है और उच्चारण के बाद वाला भाग संघर्षी हो जाता है, वे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - च्, छ, ज्, झ्।
4. **नासिक्य :** जिनके उच्चारण में हवा का प्रमुख अंश नाक से निकलता है। जैसे - ङ्, ञ, ण, न, म्।
5. **पार्श्विक :** जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग मसूड़े को छूता है और वायु पार्श्व आस-पास से निकल जाती है, वे पार्श्विक हैं - जैसे - 'ल्'।

6. **प्रकम्पित :** ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जिह्वा दो-तीन बार कंपन करती है, वे प्रकंपित व्यंजन कहलाते हैं। जैसे- 'र'

7. **उत्क्षिप्त :** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक झटके से ऊपर उठकर नीचे गिरती है तो वह उत्क्षिप्त ध्वनि कहलाती है। जैसे - ड़, ढ़

8. **संघर्ष हीन :** जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा बिना किसी संघर्ष या अवरोध के बाहर निकलती है वे संघर्षहीन ध्वनियाँ कहलाती हैं। जैसे-य, व। इनके उच्चारण में स्वरों से मिलता जुलता प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

वर्ग	**स्पर्श वर्ण**					**उच्चारण स्थान**
क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	दंत
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ
प्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	
	अघोष	अघोष	सघोष	सघोष	सघोष	घोष

व्यंजन प्रकार	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**
अंत:स्थ व्यंजन	य	तालु
	र	दंत
	ल	दंत
	व	दंत + ओष्ठ
ऊष्म व्यंजन	श	तालु
	ष	मूर्धा
	स	दंत
	ह	कंठ

संयुक्त व्यंजन

- हिन्दी में तीन संयुक्त व्यंजन होते हैं। ये दो व्यंजनों के मेल से बने होते हैं।

क्ष = क् + ष्
त्र = त् + र् + अ
ज्ञ = ज् + ञ् + अ
श्र = श् + र् + अ

अयोगवाह

- वे वर्ण जो न तो स्वर होते है और न ही व्यंजन होते है उन्हें अयोगवाह (अं अः) कहा जाता है।
- अं को अनुस्वार (नाक), अँ को अनुनासिक (नाक मुख) और अः को विसर्ग (कंठ) कहा जाता है ।

वर्णों का उच्चारण स्थान

क्र. सं.	**वर्ण**	**उच्चारण स्थान**	**उच्चारण ध्वनि**
1	क वर्ग, अ, आ और विसर्ग	कंठ कोमल तालु	कंठ्य
2	च वर्ग, इ, ई, य, श	तालु	तालव्य
3	ट वर्ग, ऋ, र, ष	मूर्द्धा	मूर्द्धन्य
4	त वर्ग, लृ, ल, स	दन्त	दन्त्य
5	प वर्ग, उ, ऊ,	ओष्ठ	ओष्ठ्य
6	अ, ङ, ञ, ण, न्, म्	नासिका	नासिक्य
7	ए ऐ	कंठ तालु	कंठ - तालव्य
8	ओ, औ	कंठ ओष्ठ	कंठोष्ठ्य
9	व	दन्त ओष्ठ	दन्तोष्ठ्य
10	ह	स्वर यन्त्र	अलिजिह्वा

महत्वपूर्ण तथ्य –

- हिंदी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिंदु) का प्रयोग किया जाता है जिन्हें आगत / गृहीत व्यंजन कहा जाता है।

- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है
  क़ – क़रीब
  ख़ – ख़राब
  ग़ – ग़म
  ज़ – ज़रा
  फ़ – फ़न (अंग्रेज़ी)
- नुक्ता / आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फ़ारसी, अंग्रेज़ी भाषा से हुआ है।
- नुक्ता व्यंजन की शुरुआत का श्रेय हिंदी विद्वान "विप्रसाद सितारे हिन्द" को जाता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

- हिंदी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अ: (विसर्ग) ध्वनियाँ हैं को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वर में जोड़ा जाता है न ही व्यंजन में
- अनुस्वार (अं) व विसर्ग (अ:) को अयोगवाह नाम देने का श्रेय किशोरी दास वाजपेयी को जाता है
- तालु उच्चारण स्थान पर आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है
- वर्त्स वर्णों में न, ल, स को शामिल किया गया है इनकी कुल संख्या 4 होती है
  1. जिह्वा
  2. अधरोष्ठ (नीचे का होठ)
  3. स्वर तंत्रियाँ
  4. कोमल तालु

- काकल वर्ण के अंतर्गत विसर्ग (:) को शामिल किया गया है
- **रकार / रेफ या र सम्बंधित नियम**
  - **(i) नियम 1:** यदि र के बाद व्यंजन आए तो र को उसी व्यंजन वर्ण के के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजनवर्ण के ऊपर लिखा जाता है
    जैसे – कर्म, धर्म, स्वर्ग, पुनर्जन्म आदि
  - **(ii) नियम 2:** यदि र से पहले व्यंजन वर्ण आये तो र को उसी व्यंजन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है
    जैसे – प्रकाश, भ्रष्ट, प्रभात, प्रेम, क्रम आदि
- **उत्क्षिप्त वर्ण का नियम**
  - ✓ **नियम 1 :** यदि शब्द की शुरुआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है
    जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया आदि
  - ✓ **नियम 2:** यदि शब्द के अंतर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आती है
    जैसे – पण्डित, बुड्ढा, खण्ड, मण्डल आदि
    नोट – उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिंदु आती है जैसे – लड़ाई, सड़क,पकड़ना, पढ़ाई आदि

Toppersnotes Unleash the topper in you

2 CHAPTER तत्सम – तद्भव शब्द

उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर शब्दों का विभाजन:

- हिन्दी भाषा में संस्कृत, विभिन्न स्थानीय बोलियों एवं विदेशी भाषाओं आदि के शब्द समाहित है।
- इस आधार पर शब्दों के दो प्रकार है –
  1. तत्सम शब्द
  2. तद्भव शब्द

तत्सम शब्द

- तत्सम शब्द **तत्** + **सम** के मेल से बना है जिसका अर्थ होता है – **'उसके समान'।**
- **तत्सम** शब्द वे शब्द होते हैं जो किसी भी भाषा में उसकी मूल भाषा से बिना अपने रूप परिवर्तन के ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं।
- चूँकि हिंदी की मूल भाषा संस्कृत है अर्थात् संस्कृत के वे शब्द जो ज्यों के त्यों हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, **तत्सम शब्द** कहलाते हैं।

  जैसे – अट्टालिका, स्वप्न,क्षेत्र, कर्म, राष्ट्र, वायु, स्नेह, आदि।

तद्भव शब्द

- तद्भव शब्द दो शब्दों **तद्** + **भव** के मेल से बना है जिसका अर्थ है 'उससे होना'। अर्थात् मूल भाषा **'संस्कृत'** से आये।
- वे शब्द जिनका उच्चारण की सुविधा के लिए हिंदी में रूप परिवर्तित कर प्रयोग किया जाता है, **तद्भव शब्द** कहलाते हैं।

जैसे – उच्छव का उत्सव, कार्य का काज, रात्रि का रात, सर्वदा का सदा, जिह्वा का जीभ आदि।

प्रमुख तत्सम - तद्भव शब्द

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अकार्य	अकाज	अग्नि	आग
अवर	ओर	अँगरखा	अँगरखा
अग्रहायण	अगहन	अंगुष्ठिका	अँगूठी
अक्षर	अच्छर/आखर	अग्रवर्ती	अगाडी
अक्षत	अच्छत	अक्षय	आखा
अक्षि	आँख	अच्युत	अचूक
अग्र	आगे	अज्ञान	अजान
अगम्य	अगम	अज्ञानी	अनजाना
अद्य	आज	अन्धकार	अँधेरा
अन्ध	अँधेरा	अन्न	अनाज
अट्टालिका	अटारी	अन्यत्र	अनत
अमावस्या	अमावस	अमूल्य	अमोल
अनार्य	अनाड़ी	अमृत	अमिय/अमीय
अम्लिका	इमली	अर्पण	अरपन
अत्र	यहाँ	अक्षवाट	अखाड़ा
अंक	आँक	अंगुलि	अँगुरी
अंचल	आँचल	अंगुष्ठ	अंगूठा
अवगुण	औगुण	अष्ट	आठ
अक्षोट	अखरोट	अखिल	आखा
अस्थि	हड्डी	अरिष्ठ	रीठा
अष्टादश	अठारह	अर्क	आक/अरक
अर्द्ध	आधा	अवतार	औतार
अश्रु	आँसू	अग्रणी	अगाडी
अगणित	अनगिनत	आम्र	आम
आमलक	आँवला	आदेश	आयस
आभीर	अहीर	आखेट	अहेर
आर्य	आरज	आलस्य	आलस
आदित्यवार	इतवार	आम्रचूर्ण	अमचूर
आश्चर्य	अचरज	आशीष	असीस
आश्विन	आसोज	आश्रय	आसरा
आषाढ़	असाढ़	आभ्यंतर	भीतर

आज्ञा	आन	आकाश	आसमान
आशा	आस	इष्टिका	ईंट
इक्षु	ईख	ईप्सा	इच्छा
ईर्ष्या	ईर्षा	उल्लास	हुलास
ऋक्ष	रीछ	उज्ज्वल	उजला
उत्साह	उछाह	उलूक	उल्लू
उपालम्भ	उलाहना	उच्च	ऊँचा
उर्दूतन	उबटन	उपालंभ	उलाहना
उत्थान	उठाना	उद्गलन	उगलना
उपवेष्टन	ओढ़ना	उलूखल	ओखली
उष्ट्र	ऊँट	उपरि	ऊपर
उपाध्याय	ओझा	एला	इलायची
उच्छवास	उसास	एवम्	तथा
उपवास	उपास	ओष्ठ/अधर	ओठ
एकत्र	इकट्ठा	कर्म	काम
कंकण	कंगन	कर्त्तव्य	करतव
कटु	कड़वा	कल्य	कल
कः	कौन	कर्पट	कपड़ा
कल्लोल	कलोल	कदली	केला
कपाट	किवाड़	कर्पूर	कपूर
कपर्दिका	कौड़ी	कर्ण	कान
कज्जल	काजल	क्वाथ	काढ़ा
कारक	कारीगर	कपोत	कबूतर
कण्टक	काँटा	कति	कई
कपित्थ	कैथा	कण	कन
कपि	तीखा	कच्छप	कछुआ
कृपा	किरपा	काँस्यकार	कसेरा
कर्तरी	कैंची	कार्य	काज/काम
काष्ठ	काठ	कार्तिक	कातिक
काक	काग/कौवा	कास	खाँसी
कांचन	कंचन	किंचित	कुछ
किरण	किरन	कुमार	कुँअर
कीर्ति	कीरति	कूप	कुएँ
कीट	कीड़ा	क्रोश	कोस
कंकति	कंघी	कुम्भकार	कुम्हार
कुक्कर	कुत्ता	काष्ठगृह	कटहरा

कटाह	कड़ाह	कुष्ठ	कोढ़
कुक्षि	कोख	क्रूर	कूर
कुपुत्र	कपूत	कदा	कब
कर्कटी	ककड़ी	कोकिल	कोयल
कन्दुक	गेंद	कृष्ण	किसन/कान्ह
कोण	कोना	कारवेल	करेला
कोष्ठिका	कोठी	कटि	कमर
कृशकाय	दुबला-पतला	कीटक	कीड़ा
कर्क/कर्कट	केकड़ा	खर्पर	खपड़ा
खर्जूर	खजूर	गर्दभ	गधा
कृषक	किसान	चतुर्विंश	चौबीस
गर्त	गड्ढ़ा	गर्मी	घाम
ग्रंथि	गाँठ	गृह	घर
गवाक्ष	गवाच्छ	ग्राम	गाँव
गायक	गवैया	ग्राहक	गाहक
ग्रामीण	गँवार	ग्रीष्म	गर्मी
गात्र	गात	गजेंद्र	गयंद
गंभीर	गहरा	गुम्फन	गूँथना
ग्रीवा	गर्दन	गुण	गुन
गुहा	गुफा	गोमय	गोबर
गोपालक	ग्वाल	गोस्वामी	गुसाँई
गोधूम	गेहूँ	गो/गौ	गाय
गौर	गोरा	गृद्ध	गीध
गृहिणी	घरनी	घटिका	घड़ी
घट	घड़ा	घृत	घी
घोटक	घोड़ा	चर्म	चाम
घृणा	घिन	चक्रवाक	चकवा
चर्मकार	चमार	चन्द्र	चाँद
चर्वण	चबाना	चुल्लिः	चूल्हा
चणक	चना	चतुष्कोण	चौकोर
चन्द्रिका	चाँदनी	चतुर्दश	चौदह
चतुर्थ	चौथा	चक्र	चाक (चक्कर)/ चकरी
चतुष्पद	चौपाया	चतुर्थी	चौथ

चंचु	चोंच	चित्रकार	चितेरा
चतुर्दिक	चहुँओर	चैत्र	चैत
चित्रक	चीता	छाया	छाँह
छत्र	छाता	चूर्ण	चून/चूरन
चिक्कण	चिकना	छिद्र	छेद
चौर	चोर	ज्येष्ठ	जेठ/बड़ा
जन्म	जनम	जामाता	जमाई
ज्योति	जोति/जोत	जीर्ण	झीना
जिह्वा	जीभ	ज्ञातिगृह	नैहर
जृम्भिका	जम्हाई	जगज्जाल	जंजाल
जंघा	जाँघ	तण्डुल	तन्दुल
ज्वर	बुखार	तप्त	तपन
तपस्वी	तपसी	तिलक	टीका
ताम्र	ताम्बा	तीक्ष्ण	तीखा
तीर्थ	तीरथ	तैल	तेल
तुन्द	तोंद	तोता	सुग्गा
त्वरित	तुरन्त	तिक्त	तीता
तुला	तराजू	दधि	दही
तृण	तिनका	दन्तधावन	दातुन
दन्त/दशन	दाँत	दमन	दबाना
दंष्ट्रिका	दाढ़ी	दण्ड	डण्डा
दद्रु	दाद	दक्षिण	दाहिना
दक्ष	दच्छ	दिशान्तर	दिसावर
दाह	डाह	दीक्षा	दक्षिणा
दिवस	दिन	द्विप्रहर	दोपहर
दश	दस	दीप	दीया
द्विवर	देवर	दैव	बच्चा
द्रम्म	दाम	दीपावली	दीवाली
दीपशलाका	दीयासलाई	दुर्लभ	दूल्हा
दुग्ध	दूध	दूर्वा	दूब
दुर्बल	दुबला	दृष्टि	दीठि
दौहित्र	दोहिता	द्वादश	बारह
द्विगुण	दूना	द्विपहरी	दुपहरी
द्विपट	दुपट्टा	धर्म	धरम
द्वितीय	दूजा	धरणी/धरित्री	धरती

धतूर	धतूरा	धूम्र	धुआँ
धूलि	धूरि	नग्न	नंगा
धैर्य	धीरज	निकृष्ट	नीच
धान्य	धान	नव्य	नया
नक्षत्र	नखत	नव	नौ
नयन	नैन	निर्गलन	निगलना
नख	नाख़ून	निर्झर	झरना
नम्र	नरम	नारिकेल	नारियल
नकुल	नेवला	नापित	नाई
नासिका	नाक	नर्क	नरक
नायक	नेता	निम्ब	नीम
निपुण	निपुन	निम्बुक	नींबू
निद्रा	नींद	निष्ठुर	निठुर
निशि	निसि	पक्व	पक्का
नृत्य	नाच	पद्म	पदम
पक्ष	पंख	पट्टिका	पाटी
पथ	पंथ	प्रत्यभिज्ञान	पहचान
पतन	पड़ना	पर्यंक	पलंग
पक्षी	पंछी	परीक्षा	परख
पक्वान्न	पकवान	परश्व:	परसों
पश्चाताप	पछतावा	पवन	पौन
पर्पट	पापड़	पत्र	पत्ता
परमार्थ	परमारथ	पंचदश	पन्द्रह
प्रतिपदा	परिवा/पड़वा/परवा	पाश	फन्दा
परशु	फरसा	पाद	पैर
पाषाण	पाहन	प्रहरा	पहरा
पंडित	पाँड़े	पिपासा	प्यास
पिप्पल	पीपल	पीत	पीला
पितृ	पितर	पल्लव	पल्ला
पिटक	पिटारा	पुष्प	पुहुप/फूल
पुच्छ	पूँछ	पुत्र	पूत
पुष्कर	पोखर	प्रतिवासी/प्रतिवेशी	पड़ोसी
पुस्तक	पोथी/किताब	पूर्ण	पूरा

पूर्व	पूरब	पाषाण	पाहन
पुण्य	पुन्य	पौत्र	पोता
पौष	पूस	प्रभाव	पर / असर
पौत्री	पोती	प्रिय	पिय
पंक्ति	पंगत/पाँत	प्रस्वेद	पसीना
प्रकट	प्रगट	प्रतिच्छाया	परछाँई
प्रस्तर	पत्थर	प्राघूर्ण	पहरूना/पहुना
प्रतिवास	पड़ोस	प्रहरी	पहरुआ
प्रतनु	पतला	फणि	फण
पृष्ठ	पीठ	बधिर	बहरा
फाल्गुन	फागुन	बन्ध्या	बाँझ
बलीवर्द	बैल	बालुका	बालू
बंध	बंधन	बुभुक्षित	भूखा
बर्कर	बकरा	भिक्षुक	भिखारी
बेर	बदरी	भद्र	भला
भ्रातृजाया	भौजाई	भगिनी	बहिन
भक्त	भगत	भाद्रपद	भादौं
भल्लुक	भालू	भ्रमर	भौंरा
भागिनेय	भानजा	भ्रातृ	भाई
भिक्षा	भीख	भगिनीपति	बहनोई
भ्रू	भौं/भौंह	मक्षिका	मक्खी
भित्ति	भीत	मस्तक	माथा
भूमि	पुहुमी	मयूर	मोर
मकर	मगर	मद्य	मद
मशक	मच्छर	मदोन्मत्त	मतवाला
मत्स्य	मछली	मर्कटी	मकड़ी
मल	मैल	मास	महीना
मनुष्य	मानुस	मातुल	मामा
महिषि	भैंस	मित्र	मीत
मार्ग	मारग/राह	मंडूक	मेंढक
मणिकार	मणिहार	मुष्टि	मुट्ठी
मातृ	माँ/माता	मुक्ता	मोती
मातृश्वसा	नानी	मत्सर	मच्छर
मृत्तिका	मिट्टी	मुख	मुँह
मिष्ठान्न	मिठाई	महिषी	भैंस

मृक्षण	माखन	मौक्तिक	मोती
मुषल	मुसल	मृतघट्ट	मरघट
मधूक	महुआ	यमुना	जमुना
मेघ	मेह	यजमान	जजमान
मृत्यु	मौत	यत्न	जतन
यन्त्र-मन्त्र	जन्तर-मन्तर	यव	जौ
यज्ञ	जग	यम	जम
यति	जती	यौवन	जोबन
यशोदा	जसोदा	यज्ञोपवीत	जनेऊ
यद्यपि	जदपि	यूथ	जत्था
याचक	जाचक	योगी	जोगी
यश	जस	रक्षा	राखी
युक्ति	जुगति	राशि	रास
युवा	जवान	रजत	चांदी
रज्जु	रस्सी	लावण्यता	लुनाई
राजपुत्र	राजपूत	लक्षण	लच्छन
रुक्ष	रुख/रूखा	लक्ष	लाख
रुदन	रोना	लवण	लक्ष्मी
रात्रि	रात	लवणता	लुनाई
लक्ष्मण	लखन	लोमशा	लोमड़ी
लज्जा	लाज	लौह	लोहा
लवंग	लौंग	वत्स	बच्चा/बछड़ा
लिछमी	लौण/नोन	वट	बड़
लेपन	लीपना	वजांग	बजरंग
लौहकार	लुहार	वर्षा	बरसात
वणिक्	बनिया	वायु /वात	बयार
वधू	बहू	वक	बगुला
वरयात्रा	बरात	वानर	बन्दर
वचन	बचन/बैन	विष्टा	बींट
वर्ष	बरस	विद्युत	बिजली
वर्ण	बरन	विकार	बिगाड़
वाष्प	भाप	वृत्तिक	बत्ती
वाणी	बैन	वंशी	बाँसुरी
विवाह	ब्याह	वृषभ	बैल
वीणा	बीना	वृद्ध	बूढ़ा

वल्गा	बाग	वर्तिका	बत्ती
वंश	बाँस	विष्ठा	बीट
व्यथा	विथा	वृश्चक	बिच्छू
वृक्ष	बिरख/बिरछ /पेड़	वक	बगुला
वर्धन	बढ़ना	शकट	छकडा
वृश्चिक	बिच्छू	शीर्ष	सीस
वार्ताक	बैंगन	शय्या	सेज
व्याघ्र	बाघ	शाप	सराप
वाद्य	बाजा	शिवाला	शिवालय
शर्करा	शक्कर/खांड	सिंधु	हिन्दू
शलाका	सलाई	शीतल	सीतल
शत	सौ	शुष्क	सूखा
शाक	साग	शूकर	सूअर
शाटिका	साड़ी	श्वसुर	ससुर
शोभन	सोहन	श्याली	साली
शिक्षा	सीख	शुष्ठि/शुंठी	सोंठ
शुक	सुआ	श्वश्रू	सास
शून्य	सूना/सुन्न	सर्षप	सरसों
शुण्ड	सूँड	श्मशान	मसान
श्यामल	साँवला	शृगाल	सियार
श्यालक	साला	श्रावण	सावन
श्मश्रु	मूँछ	मुषल	मूसल
श्वेत	सफ़ेद	षोडश	सोलह
श्वास	साँस	स्वर्ग	सरग
शृंगार	सिंगार	सप्तशती	सतसई
शृंग	सींग	स्थाली	थाली
शृणु	सून	सपत्नी	सौत
श्रेष्ठि	सेठ	सन्ध्या	साँझ
श्रद्धा	साध	स्वामी	साई
सरोवर	सरवर	साक्षी	साखी

सप्तस प्तति	सतहत्तर	सूर्य	सूरज
सर्सप	सरसों	स्कंध	कंधा
सर्प	साँप	सेतड़ाग	तालाब
सप्तति	सत्तर	स्वप्न	सपना
सत्य	सच	स्थल	थल
सूत्र	सूत	सूचि	सुई
सर्व	सब	स्थान	थान/जगह
सक्तु	सत्तू	स्नेह	नेह
सौभाग्य	सुहाग	स्फूर्ति	फुर्ती
स्वर्णकार	सुनार	हरिद्रा	हल्दी
स्वर्ण	सोना / सुवरन	हर्ष	हरख
स्कन्ध	कध	हण्डी	हाँडी
स्तम्भ	खम्भा	हस्त	हाथ
स्पर्श	परस	हास्य	हँसी
हरित	हरा	हारि	हार
हस्तिनी	हथिनी	हीरक	हीरा
हट्ट	हाट	क्षत	छत
हस्ती	हाथी	क्षति	छति
हरिण	हिरन	क्षार	खार/राख
हरीतकी	हरड़	क्षीण	छीन
हिन्दोला	हिण्डोला	त्रयोदश	तेरह
होलिका	होली	त्रिंत्रिंशत्	तैंतीस
क्षण	छिन	क्षमा	छमा
क्षत्रिय	खत्री	क्षेत्र	खेत
क्षीर	खीर	त्रिचत्वारिंशत्	तैंतालीस
स्रोत	सोता		

क्या आप जानते हैं ?

- **संस्कृत से सीधे लिए गए तत्सम शब्द जिनका तद्भव नही होता है -** 'संकल्प', ऋचा, ऋण, पार्श्व, क्षात्र, अतिथी, शेष, शावक, खग, प्रतीत, प्रकृति
- **अर्ध-तत्सम -** देव - दई

3 CHAPTER देशज एवं विदेशज शब्द

शब्द:

- वर्षों या ध्वनियों के मेल से बने हुए स्वतंत्र एवं सार्थक 'वर्ण-समूह' या 'ध्वनि-समूह' को शब्द कहते है।
  जैसे - पुस्तकालय, मकान, मिठाई, महल आदि।
- एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से निर्मित **स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि समूह** को **शब्द** कहा जाता है।
- भाषा की सबसे छोटी एवं सार्थक इकाई **शब्द** ही है। ये **ध्वनि-समूह** का ऐसा भाग है जिसका एक **अर्थ** निकलता है।
- **शब्द-व्यवस्था** का वर्गीकरण उत्पत्ति, बनावट, प्रयोग तथा अर्थ आदि के आधार पर किया जाता है।

शब्दों का वर्गीकरण			
अर्थ के आधार पर	**सार्थक शब्द**	अर्थपूर्ण शब्दों को अर्थात् वह शब्द जिसका कुछ अर्थ हो, सार्थक शब्द कहलाता है।	जैसे -आम, इधर, पानी आदि।
	निरर्थक शब्द	अर्थहीन शब्दों को अर्थात् वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट न हो, निरर्थक शब्द कहलाता है।	जैसे मआ, रघइ, नीमा आदि।
रचना या व्युत्पति के आधार पर	**रूढ़**	रूढ़ वे शब्द है जिनके खण्ड निरर्थक होते है। जैसे घोड़ा, पानी आदि।	यदि घोड़ा में 'घो' और 'ड़ा' को अलग-अलग कर देने से कोई भी अर्थ नहीं निकलता है। अतः घोड़ा एक रूढ़ शब्द है।
	यौगिक	यौगिक वे शब्द है, जिनके खण्ड सार्थक होते है।	जैसे-विद्यालय (विद्या और आलय), रसोईघर (रसोई और घर), गंगाजल (गंगा और जल) के अलग-अलग अर्थ है। अतः वे यौगिक है।
	योगरूढ़	योगरूढ़ वे शब्द है, जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ बताते है।	जैसे- 'पंकज' शब्द 'पंक' और 'ज' के मेल से बना है, जिसका विशेष अर्थ है - कमल। अतः 'पंकज' योगरूढ़ शब्द है।
रूपांतर या रूप परिवर्तन के विचार से	**विकारी**	'विकारी' वे शब्द है, जिनके लिंग, पुरुष और वचन के कारण रूप बदलते है।	लड़का - लड़कें - लड़कों
	अविकारी	जिन शब्दों के **रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता**, उन्हें **अविकारी शब्द** कहते हैं।	आज, कल, अभी, तब यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे धीरे, जल्दी, बहुत, कम

उत्पति या उद्गम के विचार से	**तत्सम**	'तत्सम' (तत्+ सम) शब्द का अर्थ है उसके समान अर्थात् संस्कृत के समान। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों-का-त्यों प्रयोग में लाते है, तत्सम शब्द कहलाते है।	जैसे -अग्नि, रात्रि, क्षेत्र, वायु, पत्र, माता-पिता आदि।
	तद्भव	'तद्भव' (तत् भव) शब्द का अर्थ है 'उससे होना' अर्थात् संस्कृत शब्दों से विकृत होने से बने शब्द। अतः संस्कृत का ऐसे शब्द जिनका रूप विकृत हो जाता है, तद्भव शब्द कहलाते है।	जैसे आग, हाथ, खेत, पत्ता, रात आदि।
	देशज	जो शब्द अन्य भाषाओं (संस्कृत को छोड़कर) या घरेलू बोलियों से हिन्दी में लाए गये है, वे देशज कहलाते है।	जैसे -कटोरा, लोटा, पगड़ी, पेट, झोला, आदि।
	विदेशी	जो शब्द किसी विदेशी भाषा से हिन्दी में मिला लिए गए है, वे विदेशज कहलाते है।	जैसे - आराम फारसी, डॉक्टर अंग्रेजी, लाश तुर्की, दाम ग्रीक आदि।
	संकर	जब दो भिन्न भाषाओं के मेल से नया शब्द बनाया जाता है, तब उसे 'संकर' शब्द कहा जाता है।	वर्षगाँठ = वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिन्दी) टिकटघर = टिकट (अंग्रेजी)+ घर (हिन्दी) जाँचकर्त्ता = जाँच (हिन्दी) + कर्ता (संस्कृत) जेलखना = जेल (अंग्रेजी) + खाना (फारसी) सीलबंद = सील (अंग्रेजी) + बंद (फारसी)

देशज शब्द

- किसी भी भाषा में प्रचलित वे शब्द जो उस भाषा के स्वयं के शब्द होते हैं जो कि **क्षेत्रीय बोलियों** पर आधारित जनता द्वारा आवश्यकतानुसार निर्मित के लिए जाते हैं, **देशज शब्द** कहलाते हैं।
- इन शब्दों का स्रोत मूल भाषा या कोई अन्य विदेशी भाषा नहीं होता।
- इनका स्रोत या तो क्षेत्रीय बोलियाँ होती हैं या इनके स्रोत का कोई प्रमाण नहीं होता है।

देशज शब्दों के प्रकार

अपनी अपनी गढ़ंत से बने शब्द

अपने मन में की भावनाओं जैसे क्रोध, ख़ुशी आदि को अभिव्यक्त करने के लिए मन से गढ़े शब्द जो कि धीरे धीरे समाज फिर आगे चलकर साहित्य में प्रचलित हो जाते हैं

ऊधम, खटखट, ठठेरा, डगमगाना, दीदी, पटाखा, पगड़ी, ऊटपटांग, खर्राटा, खुरपा, मिमियाना, बाप, बलबलाना, गड़बड़, चाट, चिमटा आदि।

द्रविड़ जातियों व भाषा से आये देशज शब्द

अनल, कज्जल, पण्डित, कांच, कुटी, लूँगी, इडली, डोसा चिकना नीर आदि।

कोल संथाल आदि जनजातियों से आए देशज शब्द

कदली से केला, कार्पस से कपास, कोड़ी, सरसों, तम्बाकू, बाजरा, भिन्डी, परवल आदि।

पहचान की ट्रिक:

- ठ, ड, ढ, खड़, भड़, धड़, धक जैसे ध्वन्यात्मक शब्द
- रोज़मर्रा के देसी शब्द

प्रमुख देशज शब्द : संदेसड़ा, डिबिया, कटोरा, लोटा, खिचड़ी, फुनगी, ठुमरी, ठेस, डोंगा, उटपटाँग, खटपट, गड़बड़, धड़ाम, घुन्ना, मुस्टंडा, उपला, ढाँचा, खलिहान, कबड्डी, परवल, चिड़िया, घरौंदा, जूता, पगड़ी, चूल्हा, कपास, लात, खुरपी, भात, किलकिल, चकल्लस, सड़क

विदेशज शब्द / विदेशी शब्द :

- किसी भी भाषा में प्रचलित वे शब्द जो उस भाषा के स्वयं के न होकर किसी अन्य विदेशी भाषा से गृहित हो, **विदेशी शब्द** कहलाते हैं। इसके पीछे राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव आदि जैसे कारण शामिल होते हैं। इन शब्दों को आगत या विदेशज शब्द भी कहा जाता है।
- हिंदी में ऐसे ही अनेक शब्द अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, चीनी, तुर्की, फ्रांसीसी, डच, जर्मनी, जापानी, तिब्बती, यूनानी, रुसी, भाषाओँ से प्रचलन में आए हैं।
- भारत में मुस्लिम शासकों व अंग्रेजों के अधिक प्रभाव के कारण हिंदी भाषा में अरबी-फ़ारसी व अंग्रेज़ी शब्दों का अधिक प्रचलन देखा जाता है।

प्रमुख विदेशी शब्द :

भाषा	प्रचलित शब्द
अंग्रेज़ी	डॉक्टर, कॉलेज, हॉस्पिटल, इंजीनियर, एजेंट, क्लास, कॉपी, पेन, कार्ड, टेलीविजन, टायर, ट्यूब, पाउडर, टीचर, डबल बेड, प्लेटफ़ॉर्म, मास्टर, मेम्बर, बैंक, बैण्ड, ब्रुश, लीडर, रेल, शर्ट, सूट, क्रिकेट, बिल्डिंग, फिल्म, बस, रेडीमेड, सिलेंडर, अंडरवियर, सीमेंट, स्कूटर, स्वैटर, यूनिफॉर्म, वोट, गार्ड, लॉटरी, कोट, पंचर, पोलिंग, निब, टेलर, ट्रक, फ़ाइल, यूनिवर्सिटी, सिग्नल, क्लर्क, कलेक्टर, कार, कैमरा, टिकट, पुलिस, स्टेशन, कम्पनी, यूनियन, स्कूल, ऑफिसर/आफीसर, ग्लास, कैंसर, ट्रेन, साइकिल, पोस्टकार्ड, मनी, नोटिस, प्लेट, पेंसिल, एजेंसी, ड्राइवर, कमिश्नर, डिप्टी, पार्सल, कप, हैट
अरबी	अक्ल, अजीब, अदालत, आज़ाद, आदमी, इज्जत, इलाज, इंतज़ार, इनाम, इस्तीफ़ा, औलाद, कमाल, कब्ज़ा, कानून, कुर्सी, किताब, किस्मत, कबीला, कीमत, गरीब, जनाब, जलसा, जवाब, जुर्माना, जिला, तहसील, ताकत, तारीख, तूफ़ान, तराजू, तमाशा, दुनिया, दफ्तर, दौलत, नतीजा, नशा, नकद, फकीर, फैसला, बहस, मदद, मतलब, लिफाफा, वकील, शतरंज, शादी, सुबह, हलवाई, हिम्मत, हिसाब, हुक्म, आखिर, असर, भीख, दावत, मामूली, औजार, औरत, हैजा, हमला, किस्सा
फारसी	अखबार, अमरूद, आराम, आवारा, आसमान, आतिशबाजी, आमदनी, कमर, कारीगर, कमीना, कुश्ती, खराब, खर्च, खजाना, खून, खुश्क, गवाह, गुब्बारा, गुलाब, जानवर, जेब, जगह, जमीन, जलेबी, तनख्वाह, तबाह, दर्जी, दवा, दरवाजा, दीवार, नमक, नेक, बीमार, मजदूर, मलाई, यार, लगाम, शेर, शराब, सूखा, सूद, सेर, सौदागर, सुल्तान, सुल्फा, आईना, देहात, सरासर, अफ़सोस, चश्मा
पुर्तगाली	अचार, अगस्त, आलपिन, आलू, आया, अन्नानास, इस्पात, कनस्तर, कारबन, कमीज, कमरा, गमला, गोभी, गोदाम, चाबी, नीलाम, पीपा, पादरी, पिस्तौल, फीता, बस्ता, बटन, बाल्टी, पपीता, प्याला, पतलून, मेज, लबादा, संतरा, साबुन, अलमारी, तौलिया, परात, काजू

तुर्की	आका, उर्दू, एलची, काबू, खाँ, कैंची, कुर्की, कलंगी, कालीन, खंजर, चाक, चिक, चेचक, चुगली, चोगा, तमगा, तोप, बारूद, बावर्ची, बीबी, बेगम, बहादुर, मुगल, लाश, ताश, चाकू
फ्रेंच (फ़्रांसीसी)	अंग्रेज, कारतूस, कूपन, टेबुल, मेयर, मार्शल, मीनू/मेनू, रेस्टोराँ, सूप, कर्फ्यू, बिगुल
चीनी / मंदारिन	चाय, लीची, लोकाट
जापानी	रिक्शा, सायोनारा
डच	तुरुप, बम, चिड़िया, ड्रिल
जर्मन	नात्सी, नाजीवाद, किंडर गार्टन
तिब्बती	लामा, डाँडी
रूसी	जार, सोवियत, रूबल, स्पुतनिक, बुर्जुग
यूनानी	एकेडमी, एटम, एटलस, टेलिफोन, बाइबिल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4 CHAPTER

उपसर्ग

- **उपसर्ग** दो शब्दों के योग से निर्मित हुआ है जिसमें **'उप'** का तात्पर्य **'समीप'**, **'निकट'** या **'पास में'** से होता है तथा **'सर्ग'** का अर्थ है **- सृष्टि करना।**
- वे **शब्दांश** जो किसी मूल शब्द के पूर्व या पहले जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं अर्थात नए अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हे **उपसर्ग** कहते हैं ।
- इन्हें **आदि प्रत्यय'** की भी संज्ञा दी जाती है क्योंकि ये शब्द के **आदि/प्रारंभ** में जुड़कर उसके अर्थ या भाव में परिवर्तन करते है या उसमें नई **विशेषता** उत्पन्न करते है।
- ये स्वतंत्र शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं होते, बल्कि किसी शब्द में संयुक्त होकर ही नये शब्द का निर्माण करते है।

उदाहरण के लिए – **'हार'** शब्द के पहले **'प्र'** उपसर्ग लगाने से उसका सम्पूर्ण अर्थ परिवर्तन हो जाता है।

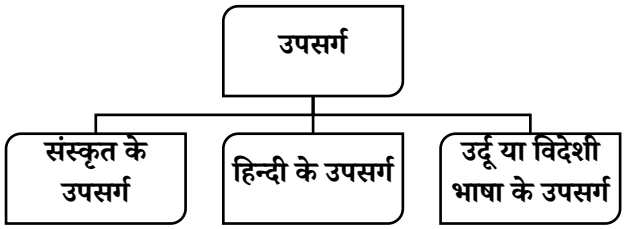

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदहारण	उपसर्ग	अर्थ	उदहारण
अति	ऊपर / अधिक / परे	अतिप्रिय, अतिरिक्त,अत्यधिक, अत्युच्च, अत्याचार, अत्यंत	**उद्**	उच्चता / श्रेष्ठ	उदार, उत्सर्ग, उत्तम, उत्साह,उत्थान,
अधि	अंतर्गत / प्रधान	अधिकार, अधिशेष, अधिकारी, अधिष्ठाता, अध्यक्ष, अधिवर्ष, अधिपति, अध्यात्म, अध्यवसाय, अधीर	**उप**	समीपता / सहायता	उपहार, उपवास, उपदेश, उपकार, उपवन, उपकरण
अनु	सादृश्य / पीछे	अनुकरण, अनुसंधान, अनुयायी, अनुशासन, अनुचर, अनुवाद, अनुशील, अनुराग, अनुशीलन, अन्वित, अन्वेषक	**दुर् / दुस्**	निंदा / कठिनाई	दुर्गुण, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुर्दशा, दुरवस्था,दुर्भाव, दुरात्मा, दुराचार,
अप	निरादर / दीनता	अपमान, अपयश, अपव्यय, अपकार, अपवाद, अपभ्रंश,	**नि**	निषेध / अधिकता	निवारण, निषेध, निलय, निवेदन, निदान, निकुंज, निवृत्त, नियम, निवारण, निकाय, निदर्शन,नितांत, निकम्मा, निकृष्ट, निरोग, निगम,निमज्जित,
अपि	निश्चय / भी	अपितु, अपिधान, अपिहित	**निर् / निस्**	रहित / बिना	निर्बल, निरपराध, निष्काम, निराकार, निस्तेज, निस्तार, निस्संकोच,निरोध, निष्पाप, निस्तेज, निष्कलंक, निश्चय,

अभि	पास / सामने	अभिमान, अभिवादन, अभिषेक, अभिराम, अभ्यास, अभीष्ट, अभ्युदय,अभियोग, अभ्यागत	**प्र**	अधिक / आगे	प्रहार, प्रबल, प्रयोग, प्रेरणा, प्रकृति, प्रख्यात,प्रकाश, प्रज्ञ, प्रस्थान,
अव	अनादर / हीनता	अवगुण, अवहेलना, अवनति, अवमानना, अवतरण, अवलोकन, अवधि, अवधी, औगुन, अवज्ञा	**प्रति**	समानता / प्रत्येक / विपरीत	प्रतिवर्ष, प्रतिवाद, प्रतिध्वनि, प्रत्यपर्ण, प्रतीक्षा, प्रतिकूल, प्रतिवाद, प्रतिघात, प्रताप, प्रतिपक्ष, प्रत्युत्पन्नमति, प्रत्युपकार, प्रत्यूष, प्रत्यागमन, प्रत्यक्ष, प्रत्याहार, प्रत्यंग,
आ	पूर्ण / सीमा	आदेश, आहार, आगमन, आजानु, आचरण, आभरण, आजन्म , आजीवन, आरक्षण, आखण्डल, आख्यायिका, आकर्षक,	**परा**	विपरीत / पीछे	पराजय, पराधीन, पराकाष्ठा, पराया, परार्थ,
सम्	पूर्णता / सुंदर	संयोग, सम्मान, संसार, समालोचना, सम्पूर्ण, समुज्ज्वल, संयोग, संस्कार, संचय, संगम, संहार, संतोष, संस्कृत, संसार, सम्मति, सम्मुख, संग्राम, संदिग्ध,संकल्प,	**परि**	चारों ओर	परिवर्तन, परिक्रमा, पर्यावरण, पर्याप्त, परिजन, परिशीलन, परिच्छेद,
वि	विशेष / अभाव	विदेश, विहीन, विभाग, विराम, विज्ञान, विकास, विराग, विमुख, वियोग,	**स्व**	अपना / निजी	स्वतंत्र, स्वदेश, स्वार्थ

हिन्दी के उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	नहीं	अकाज, अचेत, अटल, अनीति, अग्राह्य, अलौकिक, अत्यंत, अखंड, अनुज, अवैतनिक, अथक, अप्रत्याशित, अभाव, अथाह,
उ	ऊँचा	उछालना, उतारना, उजड़ना
औ	बुरा / नीचे	औगुण, औघट, औसर
अन	बिना	अनपढ़, अनदेखा, अनमोल
अध	आधा	अधमरा, अधखिला, अधपका,अधजला, अधसेरा,
अधः	नीचे	अधोगति, अधोमुख, अधोगत
उन	एक कम	उनसठ, उनचास, उन्नासी, उन्नीस
क / कु	बुरा / कठिन	कपूत, कुढंग, कुचाल, कुपात्र, कुचैला, कुटेव, कुकर्म, कुचाल, कुरूप,
नि	विपरीत	निडर, निशान, निपट,
स / सु	अच्छा	सपूत, सजल, सजीव, सुयश, सुकान्त, सुशांत, सुडौल, सुपुत्र, सुराज, सुफल, सुकुमार, सुजन, स्वलय, सुक्ति, सौजन्य, सुषुप्ति, स्वल्प, सौष्ठव, सदय, सकाम,सावकाश, सजीव, सहर्ष, सपरिवार, सजातीय, सकर्मक,

भर	भरा हुआ / पूरा	भरपूर, भरसक, भरमार, भरपेट,
चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौखट
ति	तीन	तिरंगा, तिपाही, तिमाही
दु	दो	दुनाली, दुरंगा, दुमुँहा, दुलारा, दुकाल, दुधारू,
पर	दूसरा	परहित, परसुख, परकाज
बिन	निषेध / अभाव	बिनदेखा, बिनखाया, बिनव्याहा
चिर	सदैव	चिरकाल, चिरजीवी, चिरपरिचित
बहु	ज्यादा / अधिक	बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन
सह	साथ	सहचर, सहगामी, सहयोग, सहकारी
स्व	अपना	स्वदेश, स्वराज, स्वभाव, स्वावलंबी, स्वतंत्र, स्वचालित

विदेशी (उर्दू) भाषा के उपसर्ग:

उपसर्ग	अर्थ	उदहारण	उपसर्ग	अर्थ	उदहारण
अल	निश्चित	अलविदा, अलबेला, अलमस्त, अलबत्ता	**हम**	साथ	हमदम, हमसफर, हमराह, हमदर्दी, हमउम्र,
ना	रहित	नालायक, नापसंद, नापाक	**बिला**	बिना	बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर
ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौका	**बे**	अभाव	बेचारा, बेहद, बेचैन, बाइज्जत, बाकायदा,
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लापता, लावारिस, लापरवाह, लाइलाज	**दर**	में	दरअसल, दरकार, दरवेश
बद	रहित/बुरा	बदनाम, बदजात, बदतमीज, बदमाश	**हर**	प्रत्येक	हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज
बा	अनुसार/साथ	बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत,बामुलाहजा, बातजुर्बा,	**ब**	साथ/पर	बदस्तूर, बतौर, बशर्त, बनाम, बखैर, बदस्तूर
गैर	रहित/भिन्न	गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क	**सर**	मुख्य/प्रधान	सरकार, सरदार, सरताज
खुश	अच्छा	खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशबू	**नेक**	भला	नेकदिल, नेकनीयत, नेकनाम
कम	थोड़ा	कमजोर, कमसिन, कमअक्ल, कमउम्र, कमबख्त,	**हैड**	प्रमुख	हैडमास्टर, हैडबॉय, हैड गर्ल
बिल	"के साथ," "अनुसार," "द्वारा," या "सहित"	बिलआखिर, बिल्कुल, बिलवजह			

महत्वपूर्ण बिन्दु

- 'अ' उपसर्ग का प्रयोग व्यंजन के साथ किया जाता है।
- **एक से अधिक उपसर्ग से बना शब्द :**
  - ✓ समालोचना - समालोचना = सम + आलोचना (लोच् धातु)
  - ✓ उपाध्यक्ष - उपाध्यक्ष – उप + अधि + अक्ष
  - ✓ दुर्व्यवहार - दुर् + वि + अव + हार (उपसर्ग- दुर् + वि + अव)

- **शब्द जिनमे उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ हैं -**
  - ✓ अलौकिकता = अ+लौकिक + ता (अ = उपसर्ग ; ता = प्रत्यय)
  - ✓ प्रशशानिक= प्र + शासन + इक (प्र = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
  - ✓ दुस्साहसिक = दुस् + साहस + इक। (दूस् = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
  - ✓ अनुशासनिक = अनु + शासन + इक। (अनु = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
  - ✓ सुबासिक = सु + बास + इक (सु = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
  - ✓ अभिमानी = अभि + मान + ई (अभि = उपसर्ग ; ई = प्रत्यय)
  - ✓ अंतः करणीय = अंतः + करण + इय।(अंत: = उपसर्ग ; इय = प्रत्यय)
  - ✓ अकथनीय = अ + कथन + इय।(अ = उपसर्ग ; इय = प्रत्यय)
  - ✓ अत्याचारी = अति + चार + ई (अति = उपसर्ग ; ई = प्रत्यय)
  - ✓ उजड़ना = उ + जड़ + ना (उ = उपसर्ग ; ना = प्रत्यय)
- **दो उपसर्गों के मेल से बने शब्द :**
  - ✓ निर् + आ + करण = निराकरण
  - ✓ सु + सम् + कृत = सुसंस्कृत
  - ✓ अन् + आ + हार = अनाहार

परीक्षा मे पूछे गए उपसर्ग

अन्	पीछे	अन् + आ + चरण = अनाचरण ; अनुपम अनाचार, अनपढ़, अनादि
अध:	नीचे	अधः+ लिखित= अधोलिखित
अपर	जो परलोक से उल्टा है जिससे दुःख विशेष भोगना होता है	अपर + लोक = अपरलोक
उत्	ऊपर / श्रेष्ठ	उज्जवल, उल्लेख, उद्घाटन, उच्चारण, उच्छास, उन्नत, उन्मेष, उत्पात, उत्कर्ष, उद्धार,
अल्प	हीन, कम	अल्पायु, अल्पज्ञ,अल्पव्यस्क, अल्पविराम, अल्पवयस, अल्पप्राण, अल्पसंख्यक
सत्	'अच्छा', 'सत्य', 'श्रेष्ठ', 'सही', 'शुभ', या 'सहित'	सन्मार्ग, सज्जन, सदाचार,
अलम्	पर्याप्त	अलंकार
पुन:	फिर से	पुनर्जीवन, पुनर्जन्म
किं	क्या / कुछ	'किंकिणी'
तत्	उस / उसका	तत्व, तत्काल, तत्सम, तत्पर, तदुपरांत,
प्रादुर	उत्पन्न	प्रादुर्भूत, प्रादुर्भाव
फ़िल	'में', 'पर', 'के भीतर', 'के संबंध में' या 'के दौरान'	फिलहाल,
पर	"दूसरा", "भिन्न", "पार", या "विपरीत"	परोपकार, परजीवी, परदेश, परतंत्र, परकीय, परसाल
प्राक्	पहले, पूर्व या सामने	प्राक्तन, प्रागैतिहासिक